



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

नीलोत्पल मृणाल कृत डार्क हॉर्स में चित्रित युवा मानसिकता और बेरोजगारी का सामाजिक मनोवैज्ञानिक अध्ययन

डॉ. बेनु प्रसाद सिदार

उपाध्यक्ष, शाखा महासमुंद, छत्तीसगढ़ हिंदी साहित्य समिति रायपुर छत्तीसगढ़

1. शोध सारांश (Abstract)

समकालीन हिंदी गद्य विमर्श में साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार से सम्मानित नीलोत्पल मृणाल की कृति 'डार्क हॉर्स: एक अनकही दास्तान' मात्र एक औपन्यासिक कथा नहीं है; बल्कि यह 21वीं सदी के हिंदी भाषी युवाओं के संघर्ष, कुंठा और उनके विखंडित होते मनोविज्ञान का एक प्रामाणिक समाजशास्त्रीय दस्तावेज़ है। प्रस्तुत शोध पत्र दिल्ली के 'मुखर्जी नगर' को केंद्र में रखकर, सिविल सेवा (UPSC) की तैयारी में लगे युवाओं की मानसिकता और बेरोजगारी के कारण उत्पन्न होने वाले गहरे मनोवैज्ञानिक अलगाव (Psychological Alienation) का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

इस अध्ययन का मूल उद्देश्य यह जाँचना है कि कैसे एक ग्रामीण और कस्बाई युवा—पारिवारिक अपेक्षाओं के 'मनोवैज्ञानिक ऋण' (Psychological Debt), कोचिंग संस्थानों के बाज़ारीकरण और सफलता की अंधी दौड़ के चक्रव्यूह में फँसकर—'अस्मिता के संकट' (Crisis of Identity) और अवसाद से जूझता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध इस बात का भी आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है कि लगातार मिलने वाली असफलताएँ किस प्रकार युवाओं में तुलनात्मक हीनभावना (Inferiority Complex) और पलायनवाद को जन्म देती हैं। अंततः, यह अध्ययन स्थापित करता है कि उपन्यास के मुख्य पात्र संतोष का 'डार्क हॉर्स' बनकर उभरना केवल एक व्यक्ति की सफलता नहीं है, बल्कि यह महानगरीय बाज़ारवाद और एलीट (Elite) व्यवस्था के विरुद्ध एक शोषित युवा मानसिकता की मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विजय है।

बीज शब्द (Keywords): समकालीन हिंदी उपन्यास, डार्क हॉर्स, युवा मानसिकता, बेरोजगारी, सामाजिक-मनोवैज्ञानिक अध्ययन, मुखर्जी नगर, अस्मिता का संकट, नीलोत्पल मृणाल, मनोवैज्ञानिक अलगाव।

2. प्रस्तावना (Introduction)

साहित्य सदैव अपने समय के समाज, उसकी विसंगतियों और मानव मनोविज्ञान का सबसे प्रामाणिक एक्स-रे (X-ray) होता है। प्रेमचंद के युग में जहाँ हिंदी साहित्य का केंद्र 'किसान' और 'गाँव' था, वहीं 21वीं सदी के भू-मंडलीकृत और बाज़ारवादी दौर में हिंदी साहित्य का यह केंद्र विस्थापित होकर महानगरों की उन तंग गलियों और 'कोचिंग मंडियों' में आ गया है, जहाँ भारत का युवा अपने अस्तित्व और रोज़गार की लड़ाई लड़ रहा है। समकालीन हिंदी साहित्य में इसी 'युवा विमर्श' (Youth Discourse) को अत्यंत खुरदरे,



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत करने का ऐतिहासिक कार्य नीलोत्पल मृणाल के उपन्यास 'डार्क हॉर्स: एक अनकही दास्तान' ने किया है।

प्रस्तुत शोध के विषय—'युवा मानसिकता और बेरोजगारी का सामाजिक-मनोवैज्ञानिक अध्ययन'—की पृष्ठभूमि और प्रासंगिकता को निम्नलिखित संदर्भों में समझा जा सकता है:

- मुखर्जी नगर: सपनों और कुंठाओं का 'माइक्रो-कॉस्म': उपन्यास में दिल्ली का 'मुखर्जी नगर' केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं है, बल्कि यह हिंदी पट्टी (उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश) से आए युवाओं का एक 'सामाजिक पारिस्थितिकी तंत्र' (Social Ecosystem) है। यहाँ आने वाला छात्र केवल किताबें नहीं पढ़ता, बल्कि वह अपने साथ पिता की गिरवी रखी ज़मीन, परिवार के कर्ज और समाज की अपेक्षाओं का भारी बोझ ढोता है। यह स्थान युवाओं को शुरुआत में जो 'आभासी शक्ति' देता है, वह लंबी तैयारी के बाद एक भयानक एकांतवास (Solitude) में बदल जाती है।
- बेरोजगारी का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दंश: भारतीय मध्यवर्गीय समाज में 'सरकारी नौकरी' केवल आजीविका नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा का अंतिम पैमाना है। 'डार्क हॉर्स' इस बात का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करता है कि जब सफलता नहीं मिलती और तैयारी 'पंचवर्षीय योजना' में तब्दील हो जाती है, तो युवा किस प्रकार गहरे अवसाद (Depression) का शिकार होता है। साथ पढ़ने वाले मित्रों को जीवन में आगे बढ़ते देख उत्पन्न होने वाली कुंठा और त्योहारों पर घर जाने से बचने की प्रवृत्ति (सामाजिक पलायन), बेरोजगारी के मनोवैज्ञानिक परिणामों के सटीक उदाहरण हैं।
- रोमांटिसिज्म का विखंडन और यथार्थवाद: पारंपरिक रूप से युवा जीवन को साहित्य में प्रेम, ऊर्जा और क्रांति के काव्यात्मक (Romantic) रूप में दर्शाया जाता रहा है। किंतु यह कृति इस काल्पनिकता को तोड़कर युवा पीढ़ी को कुंठा, 'राय साहब' जैसे पात्रों के बौद्धिक अहंकार (Defense Mechanism), और हीनभावना के बीच खड़ा करती है।

3. शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध का मुख्य विषय नीलोत्पल मृणाल के उपन्यास 'डार्क हॉर्स' के विशेष संदर्भ में युवाओं की मानसिकता और बेरोजगारी का 'सामाजिक-मनोवैज्ञानिक' (Socio-Psychological) विश्लेषण करना है। इस व्यापक और अंतःविषयक (Interdisciplinary) दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, प्रस्तुत शोध कार्य के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित निर्धारित किए गए हैं:

- मनोवैज्ञानिक दबाव और कुंठा का अध्ययन: प्रतियोगी परीक्षाओं (UPSC) की लंबी तैयारी (पंचवर्षीय योजना) और निरंतर असफलता के कारण युवाओं में उत्पन्न होने वाले अवसाद (Depression), कुंठा और मानसिक अंतर्द्वंद्व का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना।
- सामाजिक अलगाव (Social Alienation) का मूल्यांकन: बेरोजगारी के दंश के कारण युवाओं में पनपने वाले एकांतवास, त्योहारों एवं सामाजिक उत्सवों से उनके पलायन, और समाज के प्रति उनके बदलते दृष्टिकोण (जैसे 'राय साहब' का बौद्धिक अहंकार) का सामाजिक अध्ययन करना।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

- पारिवारिक अपेक्षाओं और 'मनोवैज्ञानिक ऋण' की पहचान: ग्रामीण और कस्बाई पृष्ठभूमि से आए युवाओं पर परिवार की आर्थिक और सामाजिक अपेक्षाओं के कारण पड़ने वाले 'मनोवैज्ञानिक दबाव' (Psychological Debt) का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
- अस्मिता के संकट (Crisis of Identity) का विश्लेषण: व्यवस्था के चक्रव्यूह, मुखर्जी नगर की रूममेट संस्कृति और बाज़ारवाद के बीच एक युवा के 'आत्मविश्वास' के पतन और उसके 'अस्मिता के संकट' को रेखांकित करना।
- भाषाई हीनभावना का सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रभाव: 'हिंदी बनाम अंग्रेजी' के व्यवस्थागत संघर्ष के कारण हिंदी माध्यम के छात्रों के भीतर पैदा होने वाली तुलनात्मक हीनभावना (Inferiority Complex) और उसके मनोवैज्ञानिक परिणामों की पड़ताल करना।
- 'डार्क हॉर्स' प्रतीक का विखंडन: उपन्यास के मुख्य पात्रों के क्रमिक मानसिक विकास और 'डार्क हॉर्स' के प्रतीक के माध्यम से यह स्थापित करना कि कैसे एक युवा सामाजिक-मनोवैज्ञानिक बाधाओं को पार करके अपनी नई पहचान गढ़ता है।

4. शोध प्रविधि (Research Methodology)

साहित्य का अध्ययन शून्य (Vacuum) में नहीं किया जा सकता, विशेषकर तब जब वह 'डार्क हॉर्स' जैसी समकालीन और यथार्थवादी कृति हो। चूँकि प्रस्तुत शोध का विषय विशुद्ध रूप से साहित्यिक न होकर 'सामाजिक' और 'मनोविज्ञान' की सीमाओं को भी स्पर्श करता है, अतः इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए 'अंतःविषयक (Interdisciplinary) शोध प्रविधि' को अपनाया गया है।

इस अध्ययन को तार्किक, प्रामाणिक और वैज्ञानिक आधार प्रदान करने के लिए निम्नलिखित शोध पद्धतियों और स्रोतों का प्रयोग किया गया है:

4.1. शोध का स्वरूप एवं आधार सामग्री (Nature of Research and Sources)

यह शोध मूल रूप से गुणात्मक (Qualitative) और विश्लेषणात्मक (Analytical) प्रकृति का है। इसमें आँकड़ों (Data) के बजाय 'कथ', 'चरित्रों के व्यवहार' और 'सामाजिक परिस्थितियों' के सूक्ष्म विश्लेषण पर बल दिया गया है।

- प्राथमिक स्रोत (Primary Source): इस शोध का मूल आधार नीलोत्पल मृणाल द्वारा रचित उपन्यास 'डार्क हॉर्स: एक अनकही दास्तान' (मूल पाठ) है।
- द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources): विषय की गहराई को समझने के लिए समकालीन हिंदी आलोचना की पुस्तकों, सामाजिक अध्ययनों (बेरोजगारी और विस्थापन पर आधारित), मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों (कुंठा और हीनभावना से संबंधित), तथा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित 'युवा विमर्श' के लेखों का संदर्भ के रूप में उपयोग किया गया है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

4.2. सामाजिक आलोचना पद्धति (Sociological Criticism Method)

साहित्य और समाज के द्वंद्वात्मक संबंध को समझने के लिए इस पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस प्रविधि के माध्यम से दिल्ली के 'मुखर्जी नगर' को एक भौगोलिक स्थान के बजाय एक 'सामाजिक पारिस्थितिकी तंत्र' (Social Ecosystem) के रूप में विश्लेषित किया गया है। अध्ययन के बिंदु: इसके अंतर्गत हिंदी भाषी युवाओं के महानगरीय प्रवास, कोचिंग संस्थानों के बाज़ारीकरण, 'रूममेट संस्कृति', और बेरोजगारी के कारण समाज में उनके गिरते हुए दर्जे (Social Status) का मूल्यांकन किया गया है। यह पद्धति यह जाँचती है कि कैसे एक युवा का व्यक्तिगत संघर्ष वास्तव में पूरे हिंदी पट्टी (Hindi Belt) के मध्यवर्गीय समाज का संरचनात्मक संघर्ष है।

4.3. मनोवैज्ञानिक अध्ययन पद्धति (Psychological Study Method)

चूँकि शोध का एक प्रमुख हिस्सा 'युवा मानसिकता' है, अतः पात्रों के मानसिक अंतर्द्वंद्व को खोलने के लिए मनोवैज्ञानिक उपकरणों का सहारा लिया गया है। इस पद्धति का उपयोग उपन्यास के प्रमुख पात्रों (जैसे- संतोष, राय साहब, गुरु) के मानसिक क्रमिक विकास और पतन को समझने के लिए किया गया है। लगातार असफलता से उत्पन्न होने वाला अवसाद (Depression), समय का ठहराव, और सामाजिक उत्सवों से पलायन (Social Alienation)। इसके अतिरिक्त, एडलर (Alfred Adler) के 'हीनभावना ग्रंथि' (Inferiority Complex) के सिद्धांत के आलोक में यह विश्लेषित किया गया है कि कैसे अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व के कारण हिंदी माध्यम का छात्र स्वयं को व्यवस्था में कमज़ोर और बौद्धिक रूप से हीन मानने लगता है।

4.4. पाठ्य-विश्लेषण एवं भाषाई विमर्श (Textual and Linguistic Discourse Analysis)

इसका प्रयोग उपन्यास में प्रयुक्त विशिष्ट 'महानगरीय युवा बोली' (Lingua Franca) और 'कोड-मिक्सिंग' (हिंदी-अंग्रेजी का मिश्रण) के अध्ययन के लिए किया गया है। यह प्रविधि इस बात का विश्लेषण करती है कि कैसे लेखक ने तत्सम-प्रधान हिंदी को खारिज करते हुए 'अटेम्प्ट', 'पंचवर्षीय योजना', 'कट-ऑफ' और आंचलिक शब्दों (का हो गुरु, भक चोन्हर) के माध्यम से युवाओं की कुंठा और उनके व्यंग्य (Satire) को यथार्थवादी स्वरूप प्रदान किया है।

4.5. विखंडन और प्रतीकवादी दृष्टि (Deconstructive and Symbolic Approach)

इस प्रविधि के माध्यम से उपन्यास के शीर्षक 'डार्क हॉर्स' के प्रतीकवाद को खोला गया है। यह पद्धति सफलता की स्थापित और एलीट (Elite) परिभाषाओं का विखंडन करती है तथा यह स्थापित करती है कि कैसे एक औसत और ग्रामीण पृष्ठभूमि का युवा अपनी निरंतरता के बल पर पूरी प्रशासनिक व्यवस्था को चुनौती दे सकता है।

5. मुख्य विश्लेषण (Main Analysis): 'डार्क हॉर्स' का सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं भाषाई मूल्यांकन नीलोत्पल मृणाल का उपन्यास 'डार्क हॉर्स: एक अनकही दास्तान' केवल सिविल सेवा (UPSC) की तैयारी करने वाले छात्रों की एक रैखिक कथा नहीं है, बल्कि यह 21वीं सदी के भारत के उस बड़े युवा वर्ग का '



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

सामाजिक एक्स-रे' है, जो अपनी भाषाई और क्षेत्रीय जड़ों के साथ महानगरों में संघर्ष कर रहा है। इस उपन्यास का समग्र मूल्यांकन निम्नलिखित चार प्रमुख विमर्शों के अंतर्गत किया जा सकता है:

5.1. मुखर्जी नगर: हिंदी भाषी युवाओं का 'माइक्रो-कॉस्म' और सामाजिक उपन्यास में दिल्ली का 'मुखर्जी नगर' केवल एक मोहल्ला या भौगोलिक स्थान नहीं है; यह एक जीवंत पात्र है, जो उम्मीदों और हताशाओं का केंद्र है। यह क्षेत्र हिंदी पट्टी (बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान) से आए युवाओं का एक 'लघु भारत' (Microcosm) है। लेखक ने यहाँ के अर्थशास्त्र का अत्यंत प्रामाणिक चित्रण किया है—10x10 के सीलन भरे कमरे, टिफिन सेंटर का उबाऊ खाना, और चाय की थड़ियों पर होने वाली वैश्विक राजनीति की अंतहीन चर्चाएं। यहाँ आने वाला युवा अकेला नहीं आता; वह अपने साथ पिता की गिरवी रखी ज़मीन, बहन की रुकी हुई शादी और पूरे गाँव की उम्मीदों का 'मनोवैज्ञानिक ऋण' (Psychological Debt) लेकर आता है। मुखर्जी नगर की कोचिंग मंडी इन्हीं भावनाओं और दबावों का बाज़ारीकरण करके फलती-फूलती है।

5.2. बेरोजगारी का दंश और मनोवैज्ञानिक अलगाव (Psychological Alienation)

इस कृति में बेरोजगारी केवल एक आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि एक गहरा मनोवैज्ञानिक आघात (Trauma) और सामाजिक कलंक है।

- समय का ठहराव और 'पंचवर्षीय योजना': जब तैयारी के वर्ष लंबे खिंचते हैं, तो युवा भयानक कुंठा (Frustration) का शिकार होता है। साथ पढ़ने वाले अन्य मित्रों को जीवन में आगे बढ़ते (शादी या नौकरी करते) देख, उसमें 'तुलनात्मक हीनभावना' पैदा होती है।
- 'राय साहब' सिंड्रोम और पलायनवाद: राय साहब का पात्र इसी मनोवैज्ञानिक विखंडन का चरम है। अथाह ज्ञान होने के बावजूद असफलता उन्हें 'बौद्धिक अहंकार' (Intellectual Superiority) के खोल में धकेल देती है। वे अपनी नाकामी को तार्किक जामा (Rationalization) पहनाकर व्यवस्था को कोसते हैं और वास्तविकता से कट जाते हैं।
- सामाजिक उत्सवों से भय: बेरोजगार युवा धीरे-धीरे समाज से कटने लगता है। होली, दीवाली या घर के आयोजनों से वह इसलिए भागता है क्योंकि उसे "और बाबू, कब तक बनोगे कलेक्टर?" जैसे चुभते सवालियों का सामना करना पड़ता है। यह एकांतवास उसे सिगरेट और अवसाद की ओर ले जाता है।

5.3. भाषाई विमर्श: हिंदी बनाम अंग्रेजी का संस्थागत संघर्ष (Linguistic Discourse)

- भाषाई साम्राज्यवाद और सीसैट (CSAT): व्यवस्था ने अंग्रेजी को ज्ञान और बुद्धिमत्ता का एकमात्र पैमाना मान लिया है। यूपीएससी में सीसैट के माध्यम से किए गए बदलाव और 'गूगल अनुवाद' (Google Translation) की भयावह त्रुटियों ने हिंदी माध्यम के छात्रों को प्रतियोगिता से बाहर कर दिया। यह केवल प्रशासनिक विफलता नहीं, बल्कि एक संस्थागत भाषाई भेदभाव है।
- भाषाई हीनभावना (Linguistic Inferiority Complex): जब एक हिंदी भाषी युवा 'कॉन्वेंट एजुकेटेड' एलीट वर्ग को देखता है, तो उसका आत्मविश्वास डगमगा जाता है। 'द हिंदू' (The Hindu) अखबार को



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

केवल स्टेटस सिंबल के लिए खरीदना इस भाषाई गुलामी और हीनभावना का सटीक समाजशास्त्रीय उदाहरण है।

- भाषाई प्रतिरोध: इन सबके बीच, संतोष का 'डार्क हॉर्स' बनकर उभरना इस बात का प्रतीक है कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम है, ज्ञान का नहीं। यह हिंदी माध्यम की उस एलीट व्यवस्था पर जीत है, जो उन्हें अयोग्य मानती थी।

5.4. समकालीन हिंदी की नई संरचना और भाषा-शैली (Narrative Craft & Style)

'डार्क हॉर्स' की भाषा ड्राइंग रूम के अभिजात्य (Elite) विमर्शों से बाहर निकलकर मुखर्जी नगर की खुरदरी ज़मीन पर खड़ी होती है। यह भाषा इस कृति की सबसे बड़ी ताकत है। 'मुखर्जी नगर' की लिंगुआ-फ्रांका और कोड-मिक्सिंग: उपन्यास में तत्सम-प्रधान हिंदी के बजाय 'प्रयोजनमूलक युवा हिंदी' का प्रयोग है। "अटेम्ट", "कट-ऑफ", "रूममेट", और "बैकअप" जैसे अंग्रेजी शब्दों का हिंदी में सहज गुंथाव (Code-mixing) एक नई महानगरीय युवा बोली का निर्माण करता है। इसमें फणीश्वरनाथ रेणु की तरह किसी एक गाँव की भाषा नहीं है, बल्कि बिहार और यूपी से आए युवाओं की 'विस्थापित आंचलिकता' है। "भौकाल" या "भक चोन्हर" जैसे शब्द सिद्ध करते हैं कि महानगर आकर भी युवा की भाषाई आत्मा उसके गाँव से ही जुड़ी रहती है। असफलता और कुंठा को छिपाने के लिए युवा जिस 'डिफेंस मैकेनिज्म' का उपयोग करते हैं, वह है—व्यंग्य। संवादों का चुटीलापन रोने के बजाय व्यवस्था पर गहरा कटाक्ष करता है, जो युवाओं के भीतर उबल रहे लावे का 'सेफ्टी वॉल्व' (Safety Valve) है।

5.2. बेरोजगारी का दंश और मनोवैज्ञानिक अलगाव:

नीलोत्पल मृणाल कृत 'डार्क हॉर्स' में 'बेरोजगारी' केवल एक आर्थिक अवस्था नहीं है; यह एक गहरा मनोवैज्ञानिक आघात (Psychological Trauma) और सामाजिक कलंक (Social Stigma) है। भारतीय मध्यवर्गीय समाज, विशेषकर हिंदी पट्टी (उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान) में 'सरकारी नौकरी' (विशेषकर सिविल सेवा) प्राप्त करना केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि 'सामाजिक प्रतिष्ठा' का अंतिम पैमाना माना जाता है। मुखर्जी नगर में रहने वाला युवा इसी प्रतिष्ठा को पाने की होड़ में अपना सब कुछ दांव पर लगा देता है। जब असफलताएं इस होड़ को लंबी खींच देती हैं, तो युवा जिस भयावह मानसिक एकांत और टूटन का शिकार होता है, उसे निम्नलिखित विश्लेषणात्मक बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

5.2.1. 'मनोवैज्ञानिक ऋण' (Psychological Debt) और पारिवारिक अपेक्षाओं का दबाव

उपन्यास में चित्रित युवा किसी संपन्न महानगरीय पृष्ठभूमि से नहीं आते, बल्कि वे ठेठ ग्रामीण या कस्बाई पृष्ठभूमि के हैं। मुखर्जी नगर में उनका संघर्ष केवल उनके भविष्य का संघर्ष नहीं है, बल्कि यह पूरे परिवार के सपनों का भार है। गाँव में पिता ज़मीन गिरवी रखकर, बहन की शादी रोककर या कर्ज लेकर हर महीने बेटे को मुखर्जी नगर पैसा भेजते हैं। यह पैसा युवा के कंधों पर एक 'मनोवैज्ञानिक ऋण' बन जाता है। वह जानता है कि वह केवल किताबें नहीं पढ़ रहा, बल्कि अपने परिवार के खून-पसीने को खर्च कर रहा है। उपन्यास के पात्र संतोष और गुरु के संवादों में यह अपराधबोध स्पष्ट झलकता है। जब परीक्षा परिणाम



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

नकारात्मक आता है, तो उन्हें सबसे ज्यादा डर अपने भविष्य से नहीं, बल्कि अपने पिता की उम्मीदों के टूटने से लगता है। यह अपराधबोध उन्हें धीरे-धीरे अंतर्मुखी (Introvert) और अवसादग्रस्त बना देता है। जब युवा पहली बार दिल्ली आता है, तो गाँव उसे एक 'भावी कलेक्टर' के रूप में विदा करता है। लेकिन 'पंचवर्षीय योजना' में तब्दील होती तैयारी के बाद, वही समाज और परिवार उसे एक 'बेरोजगार और असफल' व्यक्ति के रूप में देखने लगता है। अस्मिता (Identity) का यह पतन युवा मानसिकता को विखंडित कर देता है।

5.2.2. समय का ठहराव, असफलता और 'राय साहब' सिंड्रोम

मनोविज्ञान के अनुसार, जब व्यक्ति लंबे समय तक एक ही लक्ष्य के पीछे भागता है और लगातार असफल होता है, तो उसके भीतर समय के प्रति एक अजीबोगरीब ठहराव (Stagnation) आ जाता है। 'डार्क हॉर्स' में इसे बहुत बारीकी से उकेरा गया है।

- तुलनात्मक हीनभावना (Comparative Inferiority): मुखर्जी नगर के उस 10x10 के कमरे में बैठा युवा देखता है कि उसके साथ स्कूल में पढ़ने वाले कम मेधावी छात्र भी छोटी-मोटी नौकरियाँ पाकर सेटल हो गए हैं, उनकी शादियाँ हो रही हैं, और वे जीवन में आगे बढ़ रहे हैं। यह तुलनात्मक अध्ययन युवा के भीतर भयानक कुंठा (Frustration) पैदा करता है।
- 'राय साहब' का प्रतीकवाद: उपन्यास में 'राय साहब' का पात्र इस मनोवैज्ञानिक अलगाव का चरम (Extreme) है। राय साहब के पास ज्ञान का अथाह भंडार है, वे वैश्विक राजनीति से लेकर दर्शन तक पर घंटों बहस कर सकते हैं, लेकिन वे यूपीएससी की परीक्षा पास नहीं कर सके।
- बचाव तंत्र (Defense Mechanism): राय साहब अपनी असफलता को स्वीकार करने के बजाय उसे 'बौद्धिक श्रेष्ठता' (Intellectual Superiority) के आवरण से ढंकने का प्रयास करते हैं। वे व्यवस्था को कोसते हैं। मनोविज्ञान की भाषा में इसे 'रेशनेलाइजेशन' (Rationalization) कहते हैं—अपनी नाकामी को तार्किक जामा पहनाना। अंततः, यह बौद्धिक अहंकार उन्हें समाज और वास्तविकता से पूरी तरह काट देता है।

5.2.3. सामाजिक उत्सवों से पलायन और संबंधों का विखंडन

बेरोजगारी का सबसे भयानक दंश यह है कि यह मनुष्य से उसकी स्वाभाविक 'सामाजिकता' छीन लेती है। युवा धीरे-धीरे एक स्व-निर्मित जेल (Self-imposed Prison) में कैद होने लगता है। होली, दीपावली या छठ पूजा जैसे अवसर, जो कभी उल्लास के प्रतीक थे, बेरोजगार युवा के लिए खौफ का कारण बन जाते हैं। 'डार्क हॉर्स' के पात्र त्योहारों पर घर जाने से कतराते हैं। कारण स्पष्ट है—रिश्तेदारों और पड़ोसियों का वह चुभता हुआ सवाल: "और बाबू, क्या हो रहा है आजकल? कब तक बनोगे कलेक्टर?" इस एक सवाल से बचने के लिए युवा महीनों तक अपने कमरे में कैद रहते हैं। उपन्यास इस कटु सत्य को भी उद्घाटित करता है कि पूंजीवादी और उपयोगितावादी समाज में 'प्रेम' भी रोजगार और सफलता की शर्तों पर निर्भर करता है। करियर की अनिश्चितता युवाओं के प्रेम संबंधों में अविश्वास और दरार पैदा करती है। मुखर्जी



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

नगर की भीड़ में रहते हुए भी युवा नितांत अकेला है। वहाँ की 'रूममेट संस्कृति' में दोस्त भी एक हद तक प्रतियोगी (Competitors) होते हैं। यह एकांत उन्हें सिगरेट, चाय की थड़ियों पर व्यर्थ की बहसों और कई बार नशे की ओर ले जाता है, जो उनके मनोवैज्ञानिक अलगाव (Psychological Alienation) का अंतिम चरण है। नीलोत्पल मृणाल का 'डार्क हॉर्स' इस बात का प्रामाणिक दस्तावेज़ है कि बेरोजगारी केवल जेब खाली नहीं करती, बल्कि वह इंसान के आत्मविश्वास, उसकी सामाजिकता और उसके अस्तित्व की जड़ों को खोखला कर देती है। संतोष और राय साहब जैसे पात्रों के माध्यम से लेखक ने सिद्ध किया है कि मुखर्जी नगर केवल 'सफलता की फैक्ट्री' नहीं है, बल्कि यह उन हज़ारों गुमनाम युवाओं का 'कब्रिस्तान' भी है, जो बेरोजगारी के दंश और मानसिक अलगाव के कारण व्यवस्था और समाज के हाशिए पर धकेल दिए जाते हैं।

5.3. भाषाई विमर्श: हिंदी बनाम अंग्रेजी का संघर्ष (Linguistic Discourse)

5.3.1. अंग्रेजी का वर्चस्व और संस्थागत भेदभाव (Institutional Discrimination)

उपन्यास इस बात को स्थापित करता है कि व्यवस्था ने किस प्रकार अंग्रेजी को बुद्धिमत्ता (Intelligence) का एकमात्र पैमाना मान लिया है। उपन्यास के केंद्र में यूपीएससी परीक्षा प्रणाली में हुए वे बदलाव हैं (विशेषकर सीसैट), जिन्होंने हिंदी माध्यम के छात्रों को प्रतियोगिता से लगभग बाहर कर दिया। अनुवाद की भयावह त्रुटियों (Google Translation) के कारण हिंदी माध्यम के छात्रों का भविष्य बर्बाद होना, केवल एक प्रशासनिक विफलता नहीं, बल्कि हिंदी भाषी युवाओं के विरुद्ध एक संस्थागत षड्यंत्र के रूप में चित्रित किया गया है। संतोष और अन्य पात्रों का संघर्ष यह दिखाता है कि उनके पास इतिहास, राजनीति और दर्शन का अथाह ज्ञान है, लेकिन चूँकि वे अपनी बात फरटिदार अंग्रेजी में नहीं कह सकते, इसलिए व्यवस्था उन्हें 'अयोग्य' करार दे देती है। यह वह भाषाई साम्राज्यवाद (Linguistic Imperialism) है, जो अपनी ही ज़मीन पर अपनी भाषा बोलने वालों को दोयम दर्जे का नागरिक बना देता है।

5.3.2. भाषाई हीनभावना (Linguistic Inferiority Complex) का मनोवैज्ञानिक प्रभाव

अंग्रेजी के इस आधिपत्य का सबसे बुरा असर युवाओं के मनोविज्ञान पर पड़ता है, जिसे उपन्यास ने बहुत सूक्ष्मता से पकड़ा है मुखर्जी नगर में आने वाला हर हिंदी भाषी छात्र शुरुआत में 'भाषाई हीनभावना' का शिकार होता है। जब वह दिल्ली विश्वविद्यालय (DU) या जेएनयू (JNU) के अंग्रेजी माध्यम के 'कॉन्वेंट एजुकेटेड' छात्रों को देखता है, तो उसका आत्मविश्वास डगमगा जाता है। यह हीनभावना उन्हें बौद्धिक रूप से इतना कमजोर कर देती है कि वे खुद को इस रेस के लायक ही नहीं मानते। उपन्यास में एक बहुत ही यथार्थवादी दृश्य है जहाँ हिंदी माध्यम का छात्र केवल दिखावे के लिए अंग्रेजी अखबार 'द हिंदू' खरीदता है, भले ही उसे पूरा समझने में उसे डिक्शनरी की आवश्यकता पड़े। यह केवल एक अखबार नहीं, बल्कि मुखर्जी नगर में 'बुद्धिजीवी' (Intellectual) दिखने का एक स्टेटस सिंबल (Status Symbol) है। यह भाषाई गुलामी (Linguistic Slavery) का एक सटीक समाजशास्त्रीय उदाहरण है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

5.3.3. कोचिंग संस्थानों का बाज़ारीकरण और भाषाई राजनीति (Language Politics of Coaching Institutes)

उपन्यास कोचिंग संस्थानों की उस दोगली नीति को बेनकाब करता है जो भाषा के नाम पर व्यापार करते हैं। हिंदी माध्यम के कोचिंग संस्थान भी अपने प्रचार में अंग्रेजी शब्दों (जैसे- 'स्मार्ट क्लास', 'टेस्ट सीरीज़', 'करेंट अफेयर्स') का प्रयोग करते हैं क्योंकि शुद्ध हिंदी को 'अनप्रोफेशनल' (Unprofessional) माना जाता है। अध्ययन सामग्री (Study Material) के नाम पर अंग्रेजी की मानक किताबों का खराब और मशीनी हिंदी अनुवाद छात्रों को पकड़ा दिया जाता है, जिससे उनकी अवधारणाएं (Concepts) स्पष्ट होने के बजाय और उलझ जाती हैं। यह भाषाई शोषण बाज़ारवाद का सबसे क्रूर चेहरा है।

5.3.4. 'डार्क हॉर्स' का भाषाई प्रतिरोध (Linguistic Resistance)

इन सभी चुनौतियों के बावजूद, उपन्यास का चरमोत्कर्ष (Climax) एक सशक्त 'भाषाई प्रतिरोध' दर्ज करता है। 'डार्क हॉर्स' बनकर उभरना केवल एक व्यक्ति की सफलता नहीं है, बल्कि यह 'हिंदी माध्यम की सफलता' है। यह सफलता उस एलीट व्यवस्था को चुनौती देती है जो मानती थी कि बिना अंग्रेजी के देश की सर्वोच्च प्रशासनिक सेवा में नहीं जाया जा सकता। संतोष की जीत यह स्थापित करती है कि भाषा केवल एक टूल (Tool) है, ज्ञान (Knowledge) नहीं। अपनी ज़मीन, अपनी मिट्टी और अपनी मातृभाषा से जुड़ा युवा यदि निरंतरता बनाए रखे, तो वह किसी भी भाषाई वर्चस्व को तोड़ सकता है। 'डार्क हॉर्स' का भाषाई विमर्श यह सिद्ध करता है कि हिंदी माध्यम का छात्र केवल एक प्रतियोगी परीक्षा नहीं दे रहा है, बल्कि वह भाषाई असमानता (Linguistic Inequality) के विरुद्ध एक मौन युद्ध लड़ रहा है। यह उपन्यास हिंदी को लेकर फैलाई गई इस भ्रांति को तोड़ता है कि यह केवल पिछड़ों की भाषा है, और यह स्थापित करता है कि हिंदी दृढ़-संकल्प और प्रशासनिक नेतृत्व की भी भाषा बन सकती है।

5.4. समकालीन हिंदी की नई संरचना और भाषा-शैली: 'डार्क हॉर्स' के विशेष संदर्भ में किसी भी साहित्यिक कृति की भाषा केवल संप्रेषण (Communication) का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह उस कालखंड के समाज, मनोविज्ञान और यथार्थ का सबसे जीवंत दस्तावेज़ होती है। नीलोत्पल मृणाल का उपन्यास 'डार्क हॉर्स' समकालीन हिंदी गद्य की भाषा-शैली में एक युगांतरकारी हस्तक्षेप (Intervention) करता है। इस उपन्यास की भाषा ड्राइंग रूम के अभिजात्य (Elite) विमर्शों से बाहर निकलकर, मुखर्जी नगर की खुरदरी और पसीने से लथपथ यथार्थवादी ज़मीन पर खड़ी होती है। इस भाषाई संरचना और शैली का सामाजिक एवं विमर्शमूलक विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत किया जा सकता है:

5.4.1. तत्समता का मोहभंग और भाषाई यथार्थवाद (Linguistic Realism)

स्वतंत्रता के बाद से हिंदी साहित्य पर एक लंबे समय तक संस्कृतनिष्ठ (तत्सम-प्रधान) और किताबी हिंदी का प्रभाव रहा है। किंतु 'डार्क हॉर्स' इस 'शुद्धतावादी' (Purist) दृष्टिकोण को खारिज करता है। लेखक ने पात्रों के संवादों में उस भाषा का प्रयोग किया है जो युवा वास्तव में सोचते और बोलते हैं। यह भाषा कृत्रिम आवरण से मुक्त है। इसमें भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भारी-भरकम साहित्यिक शब्दों के बजाय



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

ठेठ और रोज़मर्रा के शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो पाठकों (विशेषकर युवाओं) के साथ एक सीधा तादात्म्य (Empathy) स्थापित करता है।

5.4.2. कोड-मिक्सिंग (Code-Mixing) और 'मुखर्जी नगर' की लिंगुआ-फ़्रांका (Lingua Franca)

उपन्यास की सबसे बड़ी भाषाई विशेषता इसकी 'कोड-मिक्सिंग' और 'कोड-स्विचिंग' है, जहाँ हिंदी और अंग्रेजी के शब्द इतनी सहजता से गुंथे हुए हैं कि वे एक नई 'महानगरीय युवा बोली' का निर्माण करते हैं। मुखर्जी नगर में यूपीएससी की तैयारी करने वाले छात्रों की अपनी एक अलग डिक्शनरी (शब्दकोश) होती है। उपन्यास में "अटेम्प्ट", "कट-ऑफ", "सीसैट" (CSAT), "ऑप्शनल", "रूममेट" और "बैकअप" जैसे अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग उसी रूप में हुआ है। "पंचवर्षीय योजना" (लंबे समय तक तैयारी करना), "रट्टाफिकेशन", और "खूँटा गाड़ना" जैसे पदबंधों (Phrases) का प्रयोग यह दर्शाता है कि कैसे युवाओं ने अपनी हताशा और संघर्ष को शब्दों का एक नया चोला पहना दिया है।

5.4.3. आंचलिकता का महानगरीय विस्तार (Metropolitan Extension of Regionalism)

'डार्क हॉर्स' में फणीश्वरनाथ रेणु की तरह किसी एक विशेष अंचल (गाँव) की भाषा नहीं है, बल्कि इसमें 'विस्थापित आंचलिकता' है। मुखर्जी नगर में बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान के युवा एक साथ रहते हैं। लेखक ने संतोष, गुरु और बाऊजी के संवादों में भोजपुरी, मगही और मैथिली की छौंक (Flavor) को बहुत ही सलीके से महानगरीय हिंदी के साथ मिलाया है। "का हो गुरु", "भक चोन्हर", या "भौकाल" जैसे शब्दों का प्रयोग यह सिद्ध करता है कि एक युवा जब महानगर आता है, तो वह केवल अपना शरीर लाता है, किंतु उसकी भाषा और उसकी आत्मा उसके गाँव (अंचल) से ही जुड़ी रहती है।

5.4.4. व्यंग्य, वक्रोक्ति और अवसाद की भाषा (Language of Satire and Irony)

बेरोजगारी और निरंतर असफलता से उत्पन्न होने वाले अवसाद (Depression) को छिपाने के लिए युवा जिस 'डिफेंस मैकेनिज्म' (बचाव तंत्र) का उपयोग करते हैं, वह है—व्यंग्य (Satire) और ब्लैक ह्यूमर (Black Humor)। उपन्यास के संवादों में जबरदस्त चुटीलापन और वक्रोक्ति है। जब पात्र अपनी गरीबी, असफलता या व्यवस्था की खामियों पर बात करते हैं, तो वे रोने के बजाय उस पर गहरा कटाक्ष करते हैं। यह व्यंग्यात्मक शैली युवाओं की उस गहरी कुंठा (Frustration) को ढोने का काम करती है, जिसे यदि सीधे शब्दों में कहा जाए तो वह असहनीय हो जाएगी। यह भाषा उनके भीतर उबल रहे लावे का 'सेप्टी वॉल्व' है।

5.4.5. बाजारवाद और कोचिंग संस्कृति की शब्दावली (Vocabulary of Commercialization)

भाषा समाज की आर्थिक संरचना का भी आईना होती है। उपन्यास की भाषा यह दिखाती है कि शिक्षा अब 'विद्यादान' नहीं, बल्कि एक 'मंडी' (Market) बन चुकी है। "पैकेज", "ब्रैंडिंग", "मटेरियल", "टेस्ट सीरीज़", और "मार्केट वैल्यू" जैसे शब्दों का हिंदी संवादों में प्रयोग यह रेखांकित करता है कि कोचिंग संस्थानों ने शिक्षा का किस हद तक बाज़ारीकरण (Commodification) कर दिया है। यह प्रयोजनमूलक (Functional) भाषा दिखाती है कि कैसे एक युवा इस बाजार में केवल एक 'ग्राहक' (Consumer) या



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

'उत्पाद' (Product) बनकर रह गया है। नीलोत्पल मृणाल की भाषा-शैली यह प्रमाणित करती है कि समकालीन 'हिंदी' अब केवल भावनाओं, आदर्शों और रस-अलंकारों की भाषा नहीं रह गई है; यह अब संघर्ष, सड़क, अधिकार, बाज़ार और युवा अवसाद की एक प्रामाणिक एवं मारक भाषा बन चुकी है। 'डार्क हॉर्स' की भाषा अपने शिल्प में जितनी अनगढ़ और खुरदरी दिखती है, अपने कथ्य और प्रभाव में वह उतनी ही धारदार और यथार्थवादी है।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

नीलोत्पल मृणाल का 'डार्क हॉर्स' केवल एक सफल प्रशासनिक अधिकारी बनने की कहानी नहीं है, बल्कि यह बेरोजगारी की आग में तपते हिंदी भाषी युवाओं का प्रामाणिक दस्तावेज़ है। यह उपन्यास स्पष्ट करता है कि समकालीन 'हिंदी' अब केवल भावनाओं और आदर्शों की भाषा नहीं रह गई है, बल्कि यह संघर्ष, सड़क, अधिकार और युवा अवसाद की भाषा बन गई है। संतोष का 'डार्क हॉर्स' के रूप में उभरना इस बात का प्रतीक है कि अपनी भाषाई जड़ों, निरंतरता और ग्रामीण चेतना से जुड़ा युवा अंततः हर एलीट व्यवस्था को चुनौती देकर अपनी जगह बना सकता है। यह कृति हिंदी विमर्श को ड्राइंग रूम से निकालकर मुखर्जी नगर की तंग और यथार्थवादी गलियों में खड़ा कर देती है।

7. संदर्भ सूची (Bibliography)

1. मृणाल, नीलोत्पल. (2015). डार्क हॉर्स: एक अनकही दास्तान. नई दिल्ली: हिन्द युग्म।
2. सिंह, नामवर. (1994). इतिहास और आलोचना. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. तिवारी, भोलानाथ. (1990). हिंदी भाषा की सामाजिक भूमिका. नई दिल्ली: दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा। (भाषाई विमर्श हेतु)
4. शर्मा, रामविलास. (1998). भाषा और समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. यादव, राजेंद्र. (2005). उपन्यास: स्वरूप और संवेदना. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
6. मृणाल, नीलोत्पल. (2019). औघड़. नई दिल्ली: हिन्द युग्म। (लेखक की विचारधारा और सामाजिक समझ के तुलनात्मक अध्ययन हेतु)
7. राय, गोपाल. (2014). हिंदी उपन्यास का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
8. यादव, राजेंद्र. (2005). उपन्यास: स्वरूप और संवेदना. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
9. तिवारी, डॉ. रामचंद्र. (2000). हिंदी का गद्य साहित्य. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
10. मधुरेश. (2011). हिंदी उपन्यास का विकास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।